Maktab_e_Ashraf
ग़ीबत
ज़बान का एक
बड़ा गुनाह
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ग़ीबत
ज़बान का एक बड़ा गुनाह

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक
मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	ग़ीबत ज़बान का एक बड़ा गुनाह
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जुलाई 2001
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फेहरिस्ते मज़ामीन

ग़ीबत

ज़बान का एक बड़ा गुनाह

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا، اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ، وَاتَّقُوا اللّٰهَ، اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ.

(سورة الحجرات:١٢)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبى الكريم ونحن علىٰ ذلك من الشاهدين والشاكرين والحمد لله رب العالمين.

"ग़ीबत" एक संगीन गुनाह

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैहि उन गुनाहों का बयान फ़रमा रहे हैं जो इस ज़बान से ज़ाहिर होते हैं, और सब से पहले उस गुनाह को ज़िक्र फ़रमाया जिसका रिवाज बहुत ज़्यादा हो चुका है, वह है ग़ीबत का गुनाह, यह ऐसी मुसीबत है जो हमारी मज्लिसों पर और हमारे मुआशरे पर छा गयी है,

कोई मज्लिस इससे ख़ाली नहीं, कोई गुफ़्तगू इससे ख़ाली नहीं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस पर बड़ी सख़्त वओ़दें बयान फ़रमाई हैं, और क़ुरआने करीम ने ग़ीबत के लिये इतने संगीन अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं कि शायद किसी और गुनाह के लिये इतने संगीन अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं किये गये। चुनांचे फ़रमाया कि:

"وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا، اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ"

"यानी एक दूसरे की ग़ीबत मत करो (क्योंकि यह ऐसा बुरा अ़मल है जैसे अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाना) क्या तुम में से कोई इसको पसन्द करता है कि अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाये? तुम इसको बहुत बुरा समझते हो" इसलिये जब तुम इस अ़मल को बुरा समझते हो तो ग़ीबत को भी बुरा समझो। इसमें ज़रा ग़ौर करें कि इसमें ग़ीबत की कितनी बुराई बयान फ़रमाई है, एक तो इन्सान का गोश्त खाना, और आदम ख़ोर बन जाना ही कितनी बुराई की बात है, और इन्सान भी कौन सा? अपना भाई? और भाई भी ज़िन्दा नहीं, बल्कि मुर्दा, अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना जितना संगीन है, उतना ही दूसरे की ग़ीबत करना संगीन और ख़तरनाक है।

"ग़ीबत" की तारीफ़

ग़ीबत के क्या मायने हैं? ग़ीबत के मायने हैं! दूसरे की पीठ पीछे बुराई बयान करना, चाहे वह बुराई सही हो, वह उसके अन्दर पाई जा रही हो, ग़लत न हो, फिर भी अगर बयान करोगे तो वह ग़ीबत में शुमार होगा, हदीस में आता है

कि एक सहाबी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया, या रसूलल्लाह! ग़ीबत क्या होती है? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया:

"ذکرک اخاک بما یکرہ"

यानी अपने भाई का उसके पीठ पीछे ऐसे अन्दाज़ में ज़िक्र करना जिसको वह ना पसन्द करता हो, यानी अगर उसको पता चले कि मेरा ज़िक्र इस तरह उस मज्लिस में किया गया था, तो उसको तक्लीफ़ हो, और वह उसको बुरा समझे, तो यह ग़ीबत है, उन सहाबी ने फिर सवाल किया कि:

"ان کان فی اخی مااقول"

अगर मेरे भाई के अन्दर वह ख़राबी हक़ीक़त में मौजूद है जो मैं बयान कर रहा हूं, तो आपने जवाब में फ़रमाया कि अगर वह ख़राबी हक़ीक़त में मौजूद है तब यह ग़ीबत है, और अगर वह ख़राबी उसके अन्दर मौजूद नहीं है, और तुम उसकी तरफ़ झूठी निस्बत कर रहे हो, तो फिर यह ग़ीबत नहीं, फिर तो यह बुहतान बन जायेगा, और दोहरा गुनाह हो जायेगा। (अबू दाऊद शरीफ़)

अब ज़रा हमारी महफ़िलों और मज्लिसों की तरफ़ नज़र डाल कर देखिये कि किस क़दर इसका रिवाज हो चुका है, और दिन रात इस गुनाह के अन्दर मुब्तला हैं। अल्लाह तआ़ला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन। बाज़ लोग इसको दुरुस्त बनाने के लिये यह कहते हैं कि मैं ग़ीबत नहीं कर रहा हूं, मैं तो उसके मुंह पर यह बात कह सकता हूं। मक़सद यह है कि जब मैं यह बात उसके मुंह पर कह सकता हूं तो मेरे लिये यह ग़ीबत करना जायज़ है, याद रखो, चाहे तुम वह बात उसके

मुंह पर कह सकते हो, या न कह सकते हो, वह हर हालत में ग़ीबत है। पस अगर तुम किसी का बुराई से ज़िक्र कर रहे हो तो यह ग़ीबत के अन्दर दाख़िल है और यह बड़ा गुनाह है।

"ग़ीबत" बड़ा गुनाह है

और यह ऐसा ही बड़ा गुनाह है जैसे शराब पीना, डाका डालना, बदकारी करना, बड़े गुनाहों में दाख़िल हैं। दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं, वे भी हरामे क़तई हैं, यह भी हरामे क़तई है, बल्कि ग़ीबत का गुनाह इस लिहाज़ से उन गुनाहों से ज़्यादा संगीन है कि ग़ीबत का ताल्लुक बन्दों के हुक़ूक़ से है, और बन्दों के हुक़ूक़ का मामला यह है कि जब तक बन्दा उसको माफ़ न कर दे उस वक़्त तक वह गुनाह माफ़ नहीं होगा, दूसरे गुनाह सिर्फ़ तौबा से माफ़ हो सकते हैं लेकिन यह गुनाह तौबा से भी माफ़ नहीं होगा, इससे इस गुनाह की संगीनी का अन्दाज़ा किया जा सकता है, ख़ुदा के लिये इसका एहतिमाम करें कि न ग़ीबत करें न ग़ीबत सुनें, और जिस मज्लिस में ग़ीबत हो रही हो, उसमें गुफ़्तगू बदलने की कोशिश करें, कोई दूसरा मौज़ू छेड़ दें, अगर उस गुफ़्तगू का रुख़ नहीं बदल सकते, तो फिर उस मज्लिस से उठ कर चले आयें, इसलिये कि ग़ीबत करना भी हराम है, और ग़ीबत सुनना भी हराम है।

ये लोग अपने चेहरे नोचेंगे

"عن انس بن مالك رضى الله تعالىٰ عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم، لما عرج بى مررت بقوم لهم اظفار من نحاس يخمشون بها وجوههم وصدورهم فقلت، من هؤلاء يا جبريل؟ قال

هؤلاء الذين ياكلون لحوم الناس ويقعون فى اعراضهم.

(ابوداؤد شريف)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ास ख़ादिम थे, दस साल तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की, वह रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस रात मेराज में मुझे ऊपर ले जाया गया, तो वहां मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ, जो अपने नाख़ुनों से अपने चेहरे नोच रहे थे, मैंने जिबरील अलैहिस्सलाम से पूछा कि ये कौन हैं? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया कि ये वे लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे, और लोगों की आबरुओं पर हमले किया करते थे।

"ग़ीबत" ज़िना से बद्तर है

चूंकि इस गुनाह को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से सहाबा–ए–किराम के सामने पेश फ़रमाया, उन सब को पेशे नज़र रखना चाहिये, ताकि हमारे दिलों में इसकी बुराई और ख़राबी बैठ जाये, अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से इसकी बुराई हमारे दिलों में बिठा दे, और इस बुराई और ख़राबी से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन। इस हदीस के अन्दर आपने देखा कि आख़िरत में उनका यह अन्जाम होगा कि अपने चेहरे नोच रहे होंगे। और एक रिवायत में जो सनद के एतिबार से बहुत मज़्बूत नहीं है, मगर मायने के एतिबार से सही है, वह यह कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ग़ीबत का गुनाह

ज़िना के गुनाह से भी बुरा है, और वजह इसकी यह बयान फ़रमाई कि ख़ुदा न करे अगर कोई ज़िना में मुब्तला हो जाये तो जब कभी नदामत और शरमिन्दगी होगी, और तौबा कर लेगा तो इन्शा–अल्लाह माफ़ हो जायेगा, लेकिन ग़ीबत का गुनाह उस वक़्त तक माफ़ नहीं होगा जब तक वह शख़्स माफ़ न कर दे जिसकी ग़ीबत और बे–इज़्ज़ती की गयी है, इतना ख़तरनाक गुनाह है। (मज्मउज़् ज़वायद)

ग़ीबत करने वाले को जन्नत से रोक दिया जायेगा

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग ग़ीबत करने वाले होंगे, उन्हों ने बज़ाहिर दुनिया में बड़े अच्छे आमाल किये होंगे, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, इबादतें कीं, लेकिन जिस वक़्त वे लोग पुल सिरात पर से गुज़रेंगे, आप हज़रात जानते हैं कि पुल सिरात एक पुल है जो जहन्नम के ऊपर से गुज़रता है, हर इन्सान को उसके ऊपर से गुज़रना है, अब जो शख़्स जन्नती है, वह उस पुल को पार करके जन्नत में पहुंच जायेगा, और अल्लाह बचाये, जिसको जहन्नम में जाना है, उसको उसी पुल के ऊपर से नीचे खींच लिया जायेगा, और जहन्नम में डाल दिया जायेगा। लेकिन ग़ीबत करने वालों को पुल के ऊपर जाने से रोक दिया जायेगा, और उनसे कहा जायेगा कि तुम आगे नहीं बढ़ सकते, जब तक इस ग़ीबत का कफ़्फ़ारा न अदा कर दोगे, यानी जिसकी ग़ीबत की है उससे माफ़ी न मांग लोगे, और वह तुम्हें माफ़ न कर दे, उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते।

बद्तरीन सूद ग़ीबत है

एक हदीस में नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहां तक फ़रमाया कि सूद इतना ज़ब्रदस्त गुनाह है कि उसके अन्दर बहुत सी ख़राबियां हैं, और बहुत से गुनाहों का मज्मूआ़ है, और इसका अदना गुनाह ऐसा है, (ख़ुदा अपनी पनाह में रखे) जैसे कोई शख़्स अपनी मां के साथ बदकारी करे, देखिये, सूद पर इतनी सख़्त वओ़द आयी है, कि ऐसी वओ़द और किसी गुनाह पर नहीं आयी, फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सब से बद्तरीन सूद यह है कि कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की आबरू पर हम्ला करे, कितनी सख़्त वओ़द बयान फ़रमाई।

(अबू दाऊद शरीफ़)

ग़ीबत, मुर्दार भाई का गोश्त खाना है

एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में दो औ़रतें थीं, उन्हों ने रोज़ा रखा, और रोज़े की हालत में दोनों औ़रतें आपस में बात चीत करने में मश्गूल हो गयीं, जिसके नतीजे में ग़ीबत तक पहुंच गयीं, किसी का ज़िक्र शुरू हुआ तो उसकी ग़ीबत भी शुरू हो गयी, थोड़ी देर बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक साहिब आये और आकर बताया कि या रसूलल्लाह उन दोनों औ़रतों ने रोज़ा रखा था, मगर उनकी हालत बहुत ख़राब हो रही है और प्यास की वजह से उनकी जान लबों पर आ रही है, और वे औ़रतें मरने के क़रीब हैं, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बज़ाहिर "वही" के

ज़रिये यह मालूम हो गया होगा कि उन औरतों ने ग़ीबत की है। चुनांचे आपने हुक्म फ़रमाया कि उन औरतों को मेरे पास लाओ, जब उन औरतों को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो आपने देखा कि हक़ीक़त में वे लबे–दम आयी हुयी हैं, फिर आपने हुक्म दिया कि एक बड़ा प्याला लाओ, चुनांचे प्याला आया तो आपने उनमें से एक से फ़रमाया कि तुम इस प्याले में क़ै (उल्टी) करो, जब उसने क़ै करनी शुरू की तो क़ै के ज़रिये अन्दर से पीप और ख़ून और गोश्त के टुकड़े ख़ारिज हुये, फिर दूसरी औरत से फ़रमाया कि तुम क़ै करो, जब उसने क़ै की तो उसमें भी ख़ून और पीप और गोश्त के टुकड़े ख़ारिज हुये, यहां तक कि वह प्याला भर गया। फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे उन बहनों भाईयों का ख़ून और पीप और गोश्त है जो तुम दोनों ने रोज़े की हालत में खाया था।

तुम दोनों ने रोज़े की हालत में जायज़ खाने से तो परहेज़ कर लिया, जो हराम खाना था, यानी दूसरे मुसलमान भाई का ख़ून और गोश्त खाना उसको तुमने नहीं छोड़ा, जिसके नतीजे में तुम दोनों के पेटों में ये चीज़ें भर गयी थीं, इसकी वजह से तुम दोनों की यह हालत हुयी, उसके बाद फ़रमाया कि आइन्दा कभी ग़ीबत का जुर्म मत करना। गोया कि उस मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने ग़ीबत की सूरते मिसाली दिखा दी कि ग़ीबत का यह अन्जाम होता है।

बात असल में यह है कि हम लोगों का ज़ौक़ ख़राब हो गया है, हमारी हिस मिट चुकी है, जिसकी वजह से गुनाह की बुराई और ख़राबी दिल से जाती रही है। लेकिन जिन लोगों

को अल्लाह तआ़ला सही हिस अ़ता फ़रमाते हैं, और सही ज़ौक़ अ़ता फ़रमाते हैं उनको इसका मुशाहदा भी करा देते हैं।

ग़ीबत करने पर इब्रतनाक ख़्वाब

चुनांचे एक ताबिई़ जिनका नाम रबई़ है। वह अपना वाक़िआ बयान करते हैं कि एक मर्तबा मैं एक मज्लिस में पहुंचा। मैंने देखा कि लोग बैठे हुये बातें कर रहे हैं, मैं भी उस मज्लिस में बैठ गया, अब बातें करने के दौरान किसी आदमी की ग़ीबत शुरू हो गयी, मुझे यह बात बुरी लगी कि हम यहां मज्लिस में बैठ कर ग़ीबत करें, चुनांचे मैं उस मज्लिस से उठ कर चला गया, इसलिये कि अगर किसी मज्लिस में ग़ीबत हो रही हो तो आदमी को चाहिये कि उसको रोके, और अगर रोकने की ताक़त न हो तो कम से कम उस गुफ़्तगू में शरीक न हो, बल्कि उठ कर चला जाये। चुनांचे मैं चला गया, थोड़ी देर बाद ख़्याल आया कि अब उस मज्लिस में ग़ीबत का मौज़ू ख़त्म हो गया होगा, इसलिये मैं दोबारा उस मज्लिस में जाकर उनके साथ बैठ गया, अब थोड़ी देर इधर उधर की बातें होती रहीं, लेकिन थोड़ी देर के बाद फिर ग़ीबत शुरू हो गयी, लेकिन मेरी हिम्मत कमज़ोर पड़ गयी, और मैं उस मज्लिस से उठ न सका, और जो ग़ीबत वे लोग कर रहे थे, पहले तो उसको सुनता रहा और फिर मैंने ख़ुद भी ग़ीबत के एक दो जुम्ले कह दिये।

जब उस मज्लिस से उठ कर घर वापस आया और रात को सोया तो ख़्वाब में एक इन्तिहाई काले रंग के आदमी को देखा, जो एक तश्त में मेरे पास गोश्त लेकर आया। जब मैंने

ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह सुअर का गोश्त है और वह काले रंग का आदमी मुझ से यह कह रहा है कि यह सुअर का गोश्त खाओ, मैंने कहा, मैं मुसलमान आदमी हूं, सुअर का गोश्त कैसे खाऊं? उसने कहा कि नहीं, यह तुम्हें खाना पड़ेगा, और फिर ज़बरदस्ती उसने गोश्त के टुकड़े उठा कर मेरे मुंह में ठूंसने शुरू कर दिये, अब मैं मना करता जा रहा हूं, और वह ठूंसता जा रहा है, यहां तक कि मुझे मतली और क़ै आने लगी, मगर वह ठूंसता जा रहा था, फिर इसी शदीद तक्लीफ़ की हालत में मेरी नींद खुल गयी, जब जागने के बाद मैंने खाने के वक़्त खाना खाया तो ख़्वाब में जो सुअर के गोश्त का बदबूदार और ख़राब ज़ायका था, वह ज़ायका मुझे अपने खाने में महसूस हुआ, और तीस दिन तक मेरा यह हाल रहा कि जिस वक़्त भी मैं खाना खाता, तो हर खाने में उस सुअर के गोश्त का बद्तरीन ज़ायका मेरे खाने में शामिल हो जाता। और इस वाक़िए से अल्लाह तआला ने इस पर मुतनब्बह फ़रमाया कि ज़रा सी देर जो मैंने ग़ीबत कर ली थी, उसका बुरा ज़ायका तीस दिन तक महसूस करता रहा। अल्लाह तआला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन।

हराम खाने का अंधेरा

बात असल में यह है कि इस माहौल की ख़राबी की वजह से हमारी हिस ख़राब हो गयी है, इसलिये गुनाह का गुनाह होना महसूस नहीं होता। हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब नानौतवी रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि एक मर्तबा एक जगह दावत में खाने के एक दो लुक़्मे खा लिये थे। वह

खाना कुछ मुश्तबह सा था, उसके हराम होने का कुछ शुबह था। बाद में फ़रमाते हैं कि मैंने एक या दो लुक़्मे जो खा लिये तो उसका अंधेरा महीनों तक दिल में महसूस होता रहा, और बार बार बुरे ख़्यालात दिल में आते रहे, गुनाह करने के जज़्बे दिल में पैदा होते रहे, और गुनाह की तरफ़ रग़बत होती रही।

गुनाह का असर एक यह भी है कि उसकी वजह से दिल में ज़ुल्मत (अंधेरा) पैदा हो जाता है उस ज़ुल्मत के नतीजे में दूसरे गुनाह करने के तक़ाज़े पैदा होते हैं, और उनकी तरफ़ आदमी बढ़ने लगता है, और गुनाहों का शौक़ पैदा हो जाता है। अल्लाह तआ़ला हम लोगों की हिस को दुरुस्त फ़रमा दे, आमीन। बहर हाल यह ग़ीबत का गुनाह बड़ा ख़तरनाक गुनाह है, जिसको अल्लाह तआ़ला सही समझ अ़ता फ़रमा दे वही जान सकता है कि मैं यह क्या कर रहा हूं, इससे अन्दाज़ा करें कि यह ग़ीबत कितना बड़ा गुनाह है।

ग़ीबत की इजाज़त के मौक़े

लेकिन एक बात ज़रा समझ लीजिये वह यह कि ग़ीबत की तारीफ़ तो मैंने आपको बता दी थी कि किसी का पीठ पीछे इस तरह ज़िक्र करना कि अगर उसे मालूम हो जाये कि मेरा इस तरह ज़िक्र किया गया है, तो उसको नागवार हो, चाहे बात सही की जा रही हो, यह है ग़ीबत, लेकिन शरीअ़त ने हर चीज़ की रियायत रखी है, इन्सान की फ़ित्रत की भी रियायत की है, इन्सान की जायज़ ज़रूरियात का भी लिहाज़ रखा है, इसलिये ग़ीबत से चन्द चीज़ों को अलग कर दिया है, अगरचे बज़ाहिर वे ग़ीबत हैं, लेकिन शरअ़न जायज़ हैं।

दूसरे को बुराई से बचाने के लिये ग़ीबत करना

जैसे एक शख़्स ऐसा काम कर रहा है, जिस से दूसरे को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा है अब अगर उस दूसरे को उसके बारे में न बताया गया तो वह उसके हाथों से नुक़्सान का शिकार हो जायेगा। उस वक़्त अगर आप उस दूसरे शख़्स को बता दें कि फ़लां शख़्स से होशियार रहना तो ऐसा करना जायज़ है। यह बात ख़ुद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखा दी, हर बात बयान करके दुनिया से तशरीफ़ ले गये। चुनांचे हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैठी हुयी थी और एक साहिब हमारी तरफ़ सामने से आ रहे थे, अभी वह साहिब रास्ते ही में थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस शख़्स की तरफ़ इशारा करके मुझ से फ़रमाया कि:

"بئس اخو العشيرة"

यह शख़्स अपने क़बीले का बुरा आदमी है। हज़रत आ़यशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं ज़रा संभल कर बैठ गयी कि यह बुरा आदमी है, ज़रा होशियार रहना चाहिये, जब वह शख़्स मज्लिस में आकर बैठ गया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी आ़दत के मुताबिक़ नर्म अन्दाज़ में गुफ़्तगू फ़रमाई, उसके बाद वह शख़्स चला गया तो हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि या रसूलल्लाह! आपने फ़रमाया कि यह शख़्स बुरा आदमी है, लेकिन जब वह आपके पास बैठ गया तो आप

उसके साथ बहुत नर्मी से और मीठे अन्दाज़ में गुफ़्तगू करते रहे, यह क्या बात है? आपने जवाब में फ़रमाया कि देखो, वह बद्तरीन शख़्स है जिसकी बुराई के ख़ौफ़ से लोग उसको छोड़ दें, यानी इस आदमी में तबीयत के लिहाज़ से फ़साद है, अगर इसके साथ नरमी का मामला न किया जाये तो फ़ितना फ़साद खड़ा कर सकता है। इसलिये मैंने अपनी आदत के मुताबिक़ उसके साथ नरमी का मामला किया। (तिर्मीज़ी शरीफ़)

उलमा–ए–किराम ने इस हदीस की शरह में लिखा है कि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले से जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बता दिया कि यह बुरा आदमी है, बज़ाहिर तो यह ग़ीबत है, इसलिये कि उसके पीठ पीछे बुराई की जा रही है, लेकिन यह ग़ीबत इसलिये जायज़ हुयी कि उसके ज़रिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़सद यह था कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को मुतनब्बह कर दिया जाये कि आइन्दा वह उसके किसी फ़साद का शिकार न हो जाये। इसलिये किसी शख़्स को दूसरे के ज़ुल्म से बचाने के लिये उसके पीठ पीछे उसकी बुराई बयान कर दी जाये तो यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं, ऐसा करना जायज़ है।

अगर दूसरे की जान का ख़तरा हो

बल्कि बाज़ सूरतों में उसकी बुराई बयान करना वाजिब है, जैसे एक आदमी को आपने देखा कि वह दूसरे पर हमला करने और उसकी जान लेने की तैयारी कर रहा है, तो ऐसी सूरत में उस दूसरे शख़्स को बताना वाजिब है कि तुम्हारी

जान ख़तरे में है ताकि वह अपना बचाओ कर सके, इसलिये ऐसे मौक़े पर ग़ीबत जायज़ हो जाती है।

खुलेआम गुनाह करने वाले की ग़ीबत

एक हदीस है, जिसका सही मतलब लोग नहीं समझते, और वह यह कि एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"لا عيبة لفاسق ولا مجاهر" (جامع الاصول)

वह यह कि "फ़ासिक़ की ग़ीबत ग़ीबत नहीं" इसका मतलब बाज़ लोग यह समझते हैं कि जो शख़्स किसी बड़े गुनाह के अन्दर मुब्तला है तो उसकी जो चाहो ग़ीबत करते रहो, वह जायज़ है, या जो बिद्अ़तों में मुब्तला है, तो उसकी ग़ीबत जायज़ है। हालांकि इस क़ौल का यह मतलब नहीं, बल्कि इसका मतलब यह है कि जो शख़्स खुलेआम बुराइयों और गुनाहों के अन्दर मुब्तला है, जैसे एक शख़्स खुल्लम खुल्ला शराब पीता है, अब अगर कोई उसके पीछे यह कहे कि वह शख़्स शराब पीता है तो यह ग़ीबत नहीं, इसलिये कि वह तो ख़ुद ही ऐलान कर रहा है कि मैं शराब पीता हूं, अब अगर उसके पीछे उसके शराब पीने का तज़्किरा किया जायेगा तो उसको नागवारी नहीं होगी, इसलिये कि वह तो ख़ुद ऐलानिया लोगों के सामने पीता है, इसलिये यह ग़ीबत में दाख़िल न होगा।

यह भी ग़ीबत में दाख़िल है

लेकिन जो काम वह दूसरों पर ज़ाहिर करना नहीं चाहता, अगर उसका तज़्किरा आप लोगों के सामने करेंगे तो वह

ग़ीबत में दाख़िल होगा। जैसे वह खुल्लम खुल्ला शराब तो पीता है, खुल्लम खुल्ला सूद तो खाता है लेकिन कोई गुनाह ऐसा है जो वह छुप कर करता है, और लोगों के सामने वह ज़ाहिर नहीं करना चाहता, और वह गुनाह ऐसा है कि उसका नुक़सान दूसरे को नहीं पहुंच सकता। तो अब उसकी ग़ीबत करना और उस गुनाह का तज़्किरा करना जायज़ नहीं। इसलिये जिस गुनाह और बुराई का काम वह खुल्लम खुल्ला कर रहा हो उसका तज़्किरा ग़ीबत में दाख़िल नहीं वर्ना ग़ीबत में दाख़िल है। यह मतलब है इस क़ौल का कि "फ़ासिक़ की ग़ीबत ग़ीबत नहीं"।

फ़ासिक़ व फ़ाजिर की ग़ीबत जायज़ नहीं

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मज्लिस में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मौजूद थे, उसी मज्लिस में किसी शख़्स ने हज्जाज बिन यूसुफ़ की बुराइयां शुरू कर दीं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने टोका और फ़रमाया कि "देखो यह जो तुम उनकी बुराईयां बयान कर रहे हो, यह ग़ीबत है, और यह मत समझना कि अगर हज्जाज बिन यूसुफ़ की गर्दन पर सैकड़ों इन्सानों का ख़ून है तो अब उसकी ग़ीबत हलाल हो गयी, हालांकि उसकी ग़ीबत हलाल नहीं हुई बल्कि अल्लाह तआला जहां हज्जाज बिन यूसुफ़ से उन सैकड़ों इन्सानों के ख़ून का हिसाब लेंगे जो उसकी गर्दन पर हैं तो वहां उस ग़ीबत का भी हिसाब लेंगे जो तुम उसके पीछे कर रहे हो। अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे,

आमीन।

इसलिये यह मत समझो कि फ़लां शख़्स फ़ासिक़ व फ़ाजिर (बुरा) और बिद्अ़ती है, उसकी जितनी चाहो ग़ीबत कर लो, बल्कि उसकी ग़ीबत करने से बचना वाजिब है।

ज़ालिम के ज़ुल्म का ज़िक्र ग़ीबत नहीं

एक और मौक़े पर भी ग़ीबत को शरीअ़त ने जायज़ क़रार दिया है। वह यह कि एक शख़्स ने तुम पर ज़ुल्म किया और अब उस ज़ुल्म का ज़िक्र किसी दूसरे से करते हो कि मेरे साथ यह ज़ुल्म हुआ है, और यह ज़्यादती हुयी है, यह ग़ीबत नहीं इसमें गुनाह नहीं। चाहे वह शख़्स जिसके सामने तुम उस ज़ुल्म का ज़िक्र कर रहे हो उस ज़ुल्म की तलाफ़ी कर सकता हो, चाहे तलाफ़ी न कर सकता हो। जैसे एक शख़्स ने तुम्हारी चोरी कर ली, अब जाकर थाने में इत्तिला दो कि फ़लां शख़्स ने चोरी कर ली है तो अब अगरचे यह उसके पीठ पीछे उसका तज़्किरा है, लेकिन ग़ीबत में दाख़िल नहीं, इसलिये कि तुम्हें नुक़सान पहुंचाया गया, तुम पर ज़ुल्म किया गया और अब तुमने उस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जाकर शिकायत की। वह तुम्हारे ज़ुल्म की तलाफ़ी कर सकते हैं तो यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं।

लेकिन अगर उस चोरी का तज़्किरा ऐसे शख़्स के सामने किया जा रहा है जो उस ज़ुल्म की तलाफ़ी नहीं कर सकता जैसे चोरी के वाक़िए के बाद कुछ लोग तुम्हारे पास आये तो तुमने उनके सामने तज़्किरा कर दिया कि आज रात फ़लां शख़्स ने हमारे साथ यह ज़्यादती कर दी तो यह बयान करने में कोई गुनाह नहीं, यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं।

देखिये: शरीअ़त हमारी फ़ित्रत की कितनी रियायत रखती है, इन्सान की फ़ित्रत यह है कि जब उसके साथ ज़ुल्म हो जाये तो कम से कम वह अपने ग़म का दुखड़ा रोकर अपने दिल की तसल्ली कर सकता है। चाहे दूसरा शख़्स उसकी तलाफ़ी कर सकता हो, या न कर सकता हो। इसलिये शरीअ़त ने इजाज़त दे दी कि इसकी इजाज़त है।

"لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ"

(سورة نساء:١٤٨)

वैसे तो अल्लाह तआ़ला इस बात को पसन्द नहीं फ़रमाते कि बुराई का तज़्किरा किया जाये लेकिन जिस शख़्स पर ज़ुल्म हुआ वह अपना ज़ुल्म दूसरों के सामने बयान कर सकता है। यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं, बल्कि जायज़ है। बहर हाल! ये जगहें अलग हैं जिन्हें ग़ीबत से अल्लाह तआ़ला ने निकाल दिया है, इसमें ग़ीबत का गुनाह नहीं लेकिन इनके अ़लावा हम लोग मज्लिस में बैठ कर क़िस्सा बयान करने के तौर पर, वक़्त गुज़ारी के तौर पर, मज्लिस जमाने के तौर पर दूसरों का ज़िक्र शुरू कर देते हैं, यह सब ग़ीबत के अन्दर दाख़िल है। ख़ुदा के लिये अपनी जानों पर रहम करके इसका दर्वाज़ा बन्द करने की कोशिश करें। और ज़रा इस ज़बान को क़ाबू में लायें। इसको थोड़ा सा लगाम लगायें, अल्लाह तआ़ला हम सब को इससे बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

ग़ीबत से बचने के लिये इरादा और हिम्मत

ग़ीबत का तज़्किरा मैंने आपके सामने कर दिया और आपने सुन लिया। लेकिन सिर्फ़ कहने सुनने से बात नहीं

बनती, जब तक पक्का अहद और इरादा न किया जाये, हिम्मत न की जाये और क़दम आगे न बढ़ाया जाये। पक्का इरादा कर लो कि आजके बाद इस ज़बान से कोई ग़ीबत का कलिमा नहीं निकलेगा इन्शा–अल्लाह। और अगर कभी ग़लती हो जाये तो फ़ौरन तौबा कर लो, और सही इलाज इसका यह है कि जिसकी ग़ीबत की है, उससे माफ़ी मांग लो, कि मैंने तुम्हारी ग़ीबत की है, मुझे माफ़ कर दो, अल्लाह के कुछ बन्दे यह काम करते हैं।

ग़ीबत से बचने का इलाज

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि बाज़ लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि मैंने आपकी ग़ीबत की थी, मुझे माफ़ कर दीजिये, मैं उनसे कहता हूं कि मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगा, लेकिन एक शर्त है, वह यह कि पहले यह बाता दो कि क्या ग़ीबत की थी? ताकि मुझे पता चले कि मेरे पीछे क्या कहा जाता है।

कहती है तुझे ख़ल्के ख़ुदा ग़ायबाना क्या?

अगर बता दोगे तो मैं माफ़ कर दूंगा। फिर फ़रमाया कि मैं इस हिक्मत से पूछता हूं कि हो सकता है कि जो बात मेरे बारे में कही हो वह दुरुस्त हो, और वाक़ई मेरे अन्दर वह ग़लती मौजूद हो, और पूछने से वह ग़लती सामने आ जायेगी तो अल्लाह तआला मुझे उससे बचने की तौफ़ीक़ दे देंगे, इसलिये मैं पूछता हूं।

इसलिये अगर ग़ीबत कभी हो जाये तो उसका इलाज यह है कि उससे कह दो कि मैंने आपकी ग़ीबत की है, उस वक़्त

आपके दिल पर आरे तो चलेंगे, अपनी ज़बान से यह कहना तो बड़ा मुश्किल काम है, लेकिन इलाज यही है, दो चार मर्तबा अगर यह इलाज कर लिया जाये तो इन्शा–अल्लाह आइन्दा के लिये सबक़ हो जायेगा। बुज़ुर्गों ने इससे बचने के दूसरे इलाज भी ज़िक्र फ़रमाये हैं, जैसे हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब दूसरे का तज़्किरा ज़बान पर आने लगे तो उस वक़्त फ़ौरन अपने ऐबों का ख़्याल करो, कोई इन्सान ऐसा नहीं है जो ऐब से ख़ाली हो, और यह ख़्याल लाओ कि खुद मेरे अन्दर तो फ़लां बुराई है, मैं दूसरों की क्या बुराई बयान करूं, और उस अज़ाब का ध्यान करो जिसका बयान अभी हुआ कि एक कलिमा अगर ज़बान से निकाल दूंगा, लेकिन उसका अन्जाम कितना बुरा है, इसके साथ साथ अल्लाह तआला से दुआ मांगे कि या अल्लाह! इस बला से नजात अता फ़रमा दीजिये। जब कभी मज्लिस में कोई तज़्किरा आने लगे तो फ़ौरन अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू कर लो, या अल्लाह यह तज़्किरा मज्लिस में आ रहा है, मुझे बचा लीजिये, मैं कहीं इसके अंदर मुब्तला न हो जाऊं।

ग़ीबत का कफ़्फ़ारा

लेकिन बाज़ रिवायतों में है, जो अगरचे हैं तो कमज़ोर, लेकिन मायने के एतिबार से सही हैं। कि अगर किसी की ग़ीबत हो गयी है तो उस ग़ीबत का कफ़्फ़रा यह है कि उसके लिये ख़ूब दुआयें करो, इस्तिग़फ़ार करो। जैसे फ़र्ज़ करें कि आज किसी को ग़फ़्लत से तंबीह हुयी कि हक़ीक़त में आज तक हम बड़ी सख़्त ग़लती के अन्दर मुब्तला रहे, मालूम नहीं

किन किन लोगों की ग़ीबत कर ली। अब आइन्दा इन्शा-अल्लाह किसी की ग़ीबत नहीं करेंगे। लेकिन अब तक जिनकी ग़ीबत की है, उनको कहां कहां तक याद करें और उनसे कैसे माफ़ी मांगे? कहां कहां जायें? इसलिये अब उनके लिये दुआ और इस्तिग़फ़ार कर लो। (मिश्कात शरीफ़)

हुक़ूक़ की तलाफ़ी की सूरत

हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि और मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने तो यह किया था कि एक ख़त लिख कर सबको भिजवा दिया, उस ख़त में यह लिखा था कि ज़िन्दगी में मालूम नहीं आपके कितने हुक़ूक़ बर्बाद हुये होंगे, कितनी ग़लतियां हुयी होंगी, मैं मुख़्तसर तौर से आप से माफ़ी मांगता हूं कि अल्लाह के लिये मुझे माफ़ कर दीजिये। यह ख़त अपने तमाम ताल्लुक़ात वालों को भिजवा दिया, उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला इसके ज़रिये उन हुक़ूक़ को माफ़ करा देंगे।

लेकिन मान लें कि ऐसे लोगों के हुक़ूक़ ज़ाया किये हैं जिनसे अब रुजू करना मुम्किन नहीं, या तो उनका इन्तिक़ाल हो चुका है। या किसी ऐसी जगह चले गये हैं कि उनका पता मालूम करना मुम्किन नहीं, तो ऐसी सूरत के लिये हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जिसकी ग़ीबत की गयी थी या जिनके हुक़ूक़ ज़या किये थे उनके हक़ में ख़ूब दुआ करो कि या अल्लाह! मैंने उसकी जो ग़ीबत की थी उसको उसके हक़ में तरक़्क़ी-ए-दरजात का सबब बना

दीजिये और उसको दीन व दुनिया की तरक़्क़ी अता फ़रमाइये और उसके हक़ में ख़ूब इस्तिग़फ़ार करो तो यह भी उसकी तलाफ़ी की एक शक्ल है।

अगर हम भी अपने ताल्लुक़ात वालों को इस क़िस्म का ख़त लिख कर भेज दें तो क्या इससे हमारी शान घट जायेगी? या बे इज़्ज़ती हो जायेगी? क्या बअ़ीद है कि इसके ज़रिये से अल्लाह तआ़ला हमारी माफ़ी का सामान कर दें।

माफ़ करने कराने की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर कोई अल्लाह का बन्दा किसी दूसरे से माफ़ी मांगे और सच्चे दिल से मांगे अब अगर सामने वाला यह देख कर कि यह मुझ से माफ़ी मांग रहा है नादिम और शरमिन्दा हो रहा है उसको माफ़ कर दे तो अल्लाह तआ़ला उस माफ़ करने वाले को उस दिन माफ़ करेगा जिस दिन उसको माफ़ी की सब से ज़्यादा हाजत होगी। और अगर एक शख़्स नादिम होकर माफ़ी मांग रहा है लेकिन यह शख़्स माफ़ी देने से इन्कार कर रहा है कि मैं माफ़ नहीं करूंगा तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैं उसको उस दिन माफ़ नहीं करूंगा जिस दिन उसको माफ़ी की सब से ज़्यादा ज़रूरत होगी। जब तू मेरे बन्दों को माफ़ नहीं करता तो तुझे कैसे माफ़ किया जाये।

इसलिये यह बड़ा ख़तरनाक मामला है। इसलिये अगर किसी शख़्स ने नदामत के साथ दूसरे से माफ़ी मांग ली तो उसने अपना फ़रीज़ा अदा कर लिया, उससे बरी हो गया, चाहे दूसरा शख़्स माफ़ करे या न करे। इसलिये हुक़ूक़ की माफ़ी

मांग कर हर वक़्त तैयार रहता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का माफ़ी मांगना

अरे हम और आप किस गिन्ती और किस लाइन में हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक मर्तबा मस्जिदे नबवी में खड़े हो गये, और तमाम सहाबा–ए–किराम को ख़िताब करते हुये फ़रमायाः आज मैं अपने आपको तुम्हारे हवाले करता हूं, अगर किसी शख़्स को मुझ से तक्लीफ़ पहुंची हो, या मैंने किसी की जानी, माली किसी भी एतिबार से हक़ तल्फ़ी की हो तो आज मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूं, अगर बदला लेना चाहते हो तो बदला ले लो, और अगर मुझे माफ़ करना चाहते हो तो माफ़ कर दो, ताकि कल क़ियामत के दिन तुम्हारा कोई हक़ मेरे ऊपर बाक़ी न रहे।

बताइये! सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वह मुह्सिने आज़म और पेशवा–ए–आज़म जिनके एक सांस के बदले सहाब–ए–किराम अपनी जानें क़ुरबान करने के लिये तैयार थे, वह फ़रमा रहे हैं कि अगर मैंने किसी को मारा हो या तक्लीफ़ पहुंचाई हो तो वह मुझ से बदला ले ले, चुनांचे एक सहाबी खड़े हो गये, और कहा कि या रसूलल्लाह! आपने एक मर्तबा मेरी कमर पर मारा था, मैं उसका बदला लेना चाहता हूं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी नागवारी का इज़्हार नहीं फ़रमाया, बल्कि फ़रमाया किः आ जाओ और बदला ले लो, कमर पर मार लो, जब वह सहाबी कमर के पीछे आ गये तो उन्हों ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह जिस वक़्त

आपने मुझे मारा था, उस वक़्त मेरी कमर नंगी थी, और इस वक़्त आपकी कमर पर कपड़ा है, अगर मैं इसी हालत में बदला लूंगा तो बदला पूरा नहीं होगा, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस वक़्त चादर ओढ़े हुए थे, आपने फ़रमाया कि मैं चादर उठा देता हूं, चुनांचे जिस वक़्त आपने चादर उठाई तो उन सहाबी ने आगे बढ़ कर उस नुबुव्वत की मुहर को चूम लिया जो आपकी पुश्त पर थी, और फिर उन सहाबी ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह गुस्ताख़ी मैंने सिर्फ़ इसलिये की ताकि मुझे इस मुहरे नुबुव्वत का बोसा लेने का मौक़ा मिल जाये, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुझे माफ़ फ़रमा दें। (मुज़्मउज़् ज़वायद)

बहर हाल, इस तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने आप को सहाबा–ए–किराम के सामने पेश कर दिया। अब हम और आप किस शुमार व क़तार में हैं। अगर हम भी अपने ताल्लुक़ात वालों को यह लिख कर भेज दें तो इससे हमारा क्या बिगड़ जायेगा। शायद इसके ज़रिये से अल्लाह तआ़ला हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दें, और इत्तिबा–ए–सुन्नत की नियत से जब यह काम करें तो इस सुन्नत की बर्कत से अल्लाह तआ़ला हमारा बेड़ा पार फ़र्मा दें। अल्लाह तआ़ला हम सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

इस्लाम का एक उसूल

देखियेः इस्लाम का एक उसूल है जो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, वह यह कि

ईमान का तक़ाज़ा यह है कि अपने लिये भी वही पसन्द करो जो दूसरे के लिये पसन्द करते हो, और दूसरों के लिये भी वही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो। और जो अपने लिये ना पसन्द हो वह दूसरों के लिये भी ना पसन्द करो। अच्छा यह बताओ कि अगर कोई शख़्स इस तरह पीठ पीछे बुराई से तुम्हारा ज़िक्र करे तो उस वक़्त तुम्हारे दिल पर क्या गुज़रेगी? तुम उसको अच्छा समझोगे या बुरा समझोगे? अगर तुम उसको बुरा समझते हो, और अपने लिये उसको पसन्द नहीं करते तो फिर क्या वजह है कि उसको तुम अपने भाई के लिये पसन्द करो? यह दोहरे मेयार बनाना कि अपने लिये कुछ और पैमाना है और दूसरे के लिये कुछ और पैमाना है। इसी का नाम मुनाफ़कत (दोगलापन) है। गोया कि ग़ीबत के अन्दर मुनाफ़कत भी दाख़िल है। जब इन बातों को सोचोगे और इस गुनाह पर जो अज़ाब दिया जायेगा उसको सोचोगे तो इन्शा-अल्लाह ग़ीबत करने के जज़्बे में कमी आयेगी।

ग़ीबत से बचने का आसान रास्ता

हमारे हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि तो यहां तक फ़रमाते हैं कि ग़ीबत से बचने का आसान रास्ता यह है कि दूसरे का ज़िक्र करो ही नहीं, न अच्छाई से ज़िक्र करो, और न बुराई से ज़िक्र करो, क्योंकि यह शैतान बड़ा ख़बीस है, इसलिये कि जब तुम किसी का ज़िक्र अच्छाई से करोगे कि फ़लां शख़्स बड़ा अच्छा आदमी है, उसके अन्दर यह अच्छाई है, तो दिमाग़ में यह बात रहेगी कि मैं तो उसकी ग़ीबत तो नहीं कर रहा बल्कि अच्छाई से

उसका ज़िक्र कर रहा हूं लेकिन फिर यह होगा कि उसकी अच्छाइयां बयान करते करते शैतान कोई जुम्ला दर्मियान में ऐसा डाल देगा जिस से वह अच्छाई बुराई के अन्दर तब्दील हो जायेगी, जैसे वह कहेगा कि फ़लां शख़्स है तो बड़ा अच्छा आदमी, मगर उसके अन्दर फ़लां ख़राबी है। यह लफ़्ज़ "मगर" आकर सारा काम ख़राब कर देगा, इसका नतीजा यह होगा कि गुफ़्तगू का रुख़ ग़ीबत की तरफ़ मुन्तक़िल हो जायेगा। इसलिये हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि दूसरों का ज़िक्र करो ही नहीं, इसलिये कि दूसरे का ज़िक्र करने की ज़रूरत ही किया है, न अच्छाई से करो और न बुराई से करो, और अगर किसी का ज़िक्र अच्छाई से कर रहे हो तो फिर ज़रा कमर कस के बैठो, ताकि शैतान ग़लत रास्ते पर न डाले।

अपनी बुराइयों पर नज़र करो

अरे भाई! दूसरों की बुराई क्यों करते हो, अपनी तरफ़ निगाह करो, अपने ऐबों का ख़्याल करो, अगर दूसरे के अन्दर कोई बुराई है तो उस बुराई का अ़ज़ाब तुम्हें नहीं मिलेगा। उस बुराई का अ़ज़ाब और सवाब वह जाने, और उसका अल्लाह जाने, तुम्हें तुम्हारे आमाल का सिला मिलना है, उसकी फ़िक्र करो:

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

अपनी तरफ़ ध्यान करो, अपने ऐबों को देखो, दूसरे के ऐबों का ख़्याल इन्सान को उसी वक़्त आता है जब इन्सान अपने आप से और अपनी बुराइयों से बे-ख़बर होता है, लेकिन

जब अपने ऐबों का ध्यान होता है उस वक़्त कभी दूसरे की बुराई की तरफ़ ख़्याल नहीं जाता, दूसरे की बुराई की तरफ़ उसकी ज़बान ही नहीं उठ सकती। बहादुर शाह ज़फ़र मरहूम ने बड़े अच्छे शेर कहे हैं। फ़रमाते हैं:

थे जब अपनी बुराइयों से बे–ख़बर
रहे ढूंडते औरों के ऐब व हुनर।

पड़ी जब अपनी बुराई पर जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से अपने ऐबों का ख़्याल और ध्यान हमारे दिलों में पैदा फ़रमा दे, आमीन। यह सारा फ़साद इससे पैदा होता है कि अपनी तरफ़ ध्यान नहीं है, यह ख़्याल नहीं है कि मुझे अपनी क़ब्र में जाकर सोना है, इसका ख़्याल नहीं कि मुझे अल्लाह तआला के सामने जवाब देना है, मगर कभी इसकी बुराई हो रही है, कभी उसकी बुराई हो रही है, इसके अन्दर फ़लां ऐब है, उसके अन्दर फ़लां ऐब है। बस दिन रात इसके अन्दर फंसे हुए हैं। ख़ुदा के लिये इससे नजात हासिल करने की कोशिश करें।

बात–चीत का रुख़ बदल दो

जिन हालात में जिस मुआशरे से हम लोग गुज़र रहे हैं, इसके अन्दर यह काम है तो मुश्किल, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन अगर इससे बचना इन्सान के इख़्तियार से बाहर होता तो अल्लाह तआला इसको हराम न करते, इसलिये इससे बचना इन्सान के इख़्तियार में है, जब कभी मज्लिस के अन्दर

बात–चीत का मौज़ू तब्दील हो तो उसको वापस ले आओ, और अगर कभी ग़ीबत के अन्दर मुब्तला हो जाओ तो फ़ौरन इस्तिग़फ़ार करो, और आइन्दा बचने के लिये दोबारा इरादे को ताज़ा करो।

"ग़ीबत" तमाम ख़राबियों की जड़ है

याद रखो, यह ग़ीबत ऐसी चीज़ है जो फ़साद पैदा करने वाली है, झगड़े इसके ज़रिये पैदा होते हैं, आपसी ना इत्तिफ़ाक़ियां इससे पैदा होती हैं, और समाज में इस वक़्त जो बिगाड़ नज़र आ रहा है, इसमें बहुत बड़ा दख़ल इस ग़ीबत का है। अगर कोई शख़्स शराब पीता हो, (ख़ुदा अपनी पनाह में रखे) तो जो शख़्स ज़रा भी दीन से ताल्लुक़ रखने वाला है, वह उसको बहुत बुरी निगाह से देखेगा, और उसको बुरा समझेगा, और यह सोचेगा कि यह शख़्स बुरी लत के अन्दर मुब्तला है, और जो शख़्स मुब्तला हो, वह ख़ुद यह सोचेगा कि मुझ से बड़ी ग़लती हो रही है, मैं एक बड़े गुनाह के अन्दर मुब्तला हूं। लेकिन एक शख़्स ग़ीबत कर रहा है तो उसके बारे में इतनी बुराई का एहसास दिल में पैदा नहीं होगा, और न ख़ुद ग़ीबत करने वाला यह समझता है कि मैं किसी बड़े गुनाह के अन्दर मुब्तला हूं। और इसका मतलब यह है कि इस गुनाह की बुराई दिलों में बैठी हुयी नहीं, और इसकी हक़ीक़त का पूरे तरीक़े से एतिक़ाद नहीं है, वर्ना दोनों गुनाहों में कोई फ़र्क़ नहीं है, अगर उसको बुरा समझ रहे हैं, तो इसको भी बुरा समझना चाहिये, इसलिये इसकी बुराई दिलों में पैदा करो कि यह ख़तरनाक बीमारी है।

इशारे के ज़रिये ग़ीबत करना

एक बार उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने मौजूद थीं, बातों बातों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़िक्र आ गया, अब बशरी तक़ाज़े की वजह से सौकनों के अन्दर आपस में ज़रा सी खींच तान हुआ करती है, हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का क़द ज़रा छोटा था। तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनका ज़िक्र करते हुए हाथ से इशारा कर दिया कि वह छोटे क़द वाली ठिगनी हैं। ज़बान से यह नहीं का कि वह ठिगनी हैं। बल्कि हाथ से इशारा कर दिया तो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः ऐ आयशा! आज तुमने एक ऐसा अमल किया कि अगर इस अमल की बू और इसका ज़हर समुन्दर में डाल दिया जाये तो पूरे समुन्दर को बदबूदार ज़हरीला बना दे। अब आप अन्दाज़ा लगायें कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ीबत के मामूली इशारे की कितनी बुराई बयान फ़रमाई है, और फ़रमाया कि कोई शख़्स मुझे सारी दुनिया की दौलत लाकर दे दे तो भी मैं किसी की नक़ल उतारने को तैयार नहीं, जिसमें दूसरे का मज़ाक़ उड़ाना हो, जिसमें उसकी बुराई का पहलू निकलता हो। (तिर्मीज़ी शरीफ़)

ग़ीबत से बचने की पाबन्दी करें

अब तो नक़ल उतारना फ़ुनूने लतीफ़ा के अन्दर दाख़िल है, और वह शख़्स तारीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात का मुस्तहिक़

होता है जिसको दूसरे की नक़ल उतारने का फ़न आता हो, हालांकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह फ़रमा रहे हैं कि कोई शख़्स सारी दुनिया की दौलत भी लाकर दे दे तब भी मैं नक़ल उतारने को तैयार नहीं, इससे आप अन्दाज़ा कर सकते हैं कि नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कितने एहतिमाम से इन बातों से रोका है। मगर हम लोगों को मालूम नहीं क्या हो गया है कि हम शराब पीने को बुरा समझेंगे, जिनाकारी को बुरा समझेंगे, लेकिन ग़ीबत को बुरा नहीं समझते, इसको मां का दूध समझा हुआ है। कोई मज्लिस इससे ख़ाली नहीं, ख़ुदा के लिये इससे बचने की पाबन्दी करें।

ग़ीबत से बचने का तरीक़ा

इससे बचने का तरीक़ा यह है कि इसकी बुराई ज़ेहन में बिठा के अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि या अल्लाह! यह ग़ीबत बड़ा संगीन गुनाह है, मैं इससे बचना चाहता हूं लेकिन मज्लिसों में दोस्त व अहबाब और अ़ज़ीज़ व रिश्तेदारों से बातें करते हुए ग़ीबत की बातें भी हो जाती हैं। ऐ अल्लाह! मैं अपनी तरफ़ से इस बात का अ़ज़्म (पक्का इरादा) कर रहा हूं कि आइन्दा ग़ीबत नहीं करूंगा। लेकिन इस अ़ज़्म पर क़ायम और साबित रहना आपकी तौफ़ीक़ के बग़ैर मुम्किन नहीं, ऐ अल्लाह! अपनी रह्मत से मुझे इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, ऐ अल्लाह! मुझे हिम्मत अ़ता फ़रमा, हौसला अ़ता फ़रमा दीजिये। अ़ज़्म करके यह दुआ़ कर लें। यह काम आज ही कर लें।

ग़ीबत से बचने का अ़हद करें

देखो कि जब तक इन्सान किसी काम का अ़ज़्म (अ़हद)

और इरादा नहीं कर लेता, उस वक़्त तक दुनिया में कोई काम नहीं हो सकता, और दूसरी तरफ़ शैतान हर अच्छे काम को टलाता रहता है। अच्छा यह काम कल से शुरू करेंगे। जब कल आयी तो कोई उज़्र पेश आ गया, अब कहा कि अच्छा कल से शुरू करेंगे, और कल फिर आती ही नहीं, जो काम करना हो वह अभी कर लो, इसलिये कि जिस काम को टला दिया, वह टल गया।

देखिये! अगर किसी को रोज़गार न मिल रहा हो तो वह रोज़गार के लिये बेचैन होगा या नहीं? किसी पर अगर क़र्ज़ा हो तो वह क़र्ज़ा अदा करने के लिये बेचैन होगा या नहीं? अगर कोई बीमार है तो वह शिफ़ा हासिल करने तक बेचैन है या नहीं? तो फिर क्या वजह है कि हमारे अन्दर इस बात की बेचैनी क्यों नहीं कि हमसे यह बुरी आदत नहीं छूट रही है? बेचैनी पैदा करके दो रक्अ़त "सलातुल हाजः" पढ़ कर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो कि या अल्लाह मैं इस बुराई से बचना चाहता हुं। अपनी रह्मत से इस बुराई से बचा लीजिये, और हमें इस्तिक़ामत (अपने इस इरादे पर जमे रहना) अ़ता फ़रमा दीजिये। दुआ़ करने के बाद इस बात का इरादा करके अपने ऊपर पाबन्दी लगा लें।

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अगर इससे काम न चले तो अपने ऊपर जुर्माना मुक़र्रर कर लो, जैसे यह इरादा करें कि जब कभी ग़ीबत होगी तो दो रक्अ़त नफ़िल पढ़ूंगा। या इतनी रक़म सदक़ा करूंगा, इस तरह करने से धीरे धीरे इन्शा-अल्लाह इससे नजात हो जायेगी। और इस बीमारी से नजात हासिल करनी है, और इसकी बेचैनी ऐसी ही

पैदा करनी है जैसे बीमार आदमी इलाज कराने के लिये बेचैन होता है। इसलिये कि यह भी एक बीमारी है, और बहुत ख़तरनाक बीमारी है, और जिस्मानी बीमारी से ज़्यादा ख़तरनाक है, इसलिये कि यह बीमारी जहन्नम की तरफ़ लेजा रही है। इसलिये ख़ुद भी इससे बचें, और अपने घर वालों को भी इससे बचायें। इसलिये कि ख़ास तौर से औरतों के अन्दर यह वबा बहुत ज़्यादा आम है, जहां पर औरतें बैठीं, बस किसी न किसी का ज़िक्र शुरू हो गया, और उसमें ग़ीबतें शुरू हो गयीं, और औरतें इस पर अमल कर लें, और इस गुनाह से बच जायें, तो घरानों की इस्लाह हो जाये। अल्लाह तआला मुझे भी अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और आपको भी अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

"चुग़ली" एक संगीन गुनाह

एक और गुनाह जो ग़ीबत से मिलता जुलता है, और इतना ही संगीन है। बिल्क इससे ज़्यादा संगीन है, वह है "चुग़ली" अर्बी ज़बान में इसको "नमीमा" कहते हैं। उर्दू ज़बान में "नमीमा" का तर्जुमा चुग़ली से किया जाता है। लेकिन इसका यह सही तर्जुमा नहीं है। इसलिये कि "नमीमा" की हक़ीक़त यह है कि किसी शख़्स की कोई बुराई दूसरे के सामने इस नियत से की जाये, ताकि सुनने वाला उसको कोई तक्लीफ़ पहुंचाये, और यह शख़्स ख़ुश हो कि अच्छा हुआ उसको यह तक्लीफ़ पहुंची, यह है नमीमा की तारीफ़, और इसमें ज़रूरी नहीं है कि जो बुराई उसने बयान की हो वह हक़ीक़त में उसके अन्दर मौजूद हो, चाहे वह बुराई उसके अन्दर मौजूद हो या न हो, लेकिन तुमने सिर्फ़ इस वजह से

उसको बयान किया ताकि दूसरा शख़्स उसको तक्लीफ़ पहुंचाये। यह "नमीमा" है।

"चुग़ली" ग़ीबत से बद्तर है

कुरआन व हदीस में इसकी बहुत ज़्यादा मज़म्मत और बुराई बयान की गयी है। और यह ग़ीबत से भी ज़्यादा सख़्त इस वजह से है कि ग़ीबत में नियत का बुरा होना ज़रूरी नहीं कि जिसकी मैं ग़ीबत कर रहा हूं उसको कोई तक्लीफ़ और सदमा पहुंचे, लेकिन नमीमा में बद नियती का होना भी ज़रूरी है, इसलिये यह नमीमा दो गुनाहों का मज्मूआ है, एक तो इसमें ग़ीबत है, दूसरे यह कि दूसरे मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाने की ख़्वाहिश और नियत भी है, इसलिये इसमें डबल गुनाह है, और इसलिये कुरआने करीम और हदीस में इस पर बड़ी सख़्त वअ़ीदें आयी हैं, चुनांचे फ़रमाया कि:

"هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ" (سورة القلم:١١)

काफ़िरों की सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया कि ये उस शख़्स की तरह चलते हैं, जो दूसरों के ऊपर ताने देता है, और चुग़लियां लगाता फिरता है, हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

"لايدخل الجنة قتات" (بخاری شریف)

"क़त्तात" यानी चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, "क़त्तात" भी चुग़ल ख़ोर को कहते हैं।

क़ब्र के अ़ज़ाब के दो सबब

और एक हदीस मश्हूर है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा–ए–किराम रज़िल्लाहु

अन्हुम के साथ तशरीफ़ लेजा रहे थे, रास्ते में एक जगह पर देखा कि दो क़ब्रें बनी हुई हैं। जब आप उन क़ब्रों के क़रीब पहुंचे तो आपने उनकी तरफ़ इशारा करते हुए सहाबा–ए–किराम से फ़रमाया कि:

"انهما ليعذ بان"

इन दोनों क़ब्रों पर अज़ाब हो रहा है, अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर अज़ाबे क़ब्र ज़ाहिर फ़रमा दिया था। यह अज़ाबे क़ब्र ऐसी चीज़ है कि एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब क़ब्र के अन्दर अज़ाब होता है तो अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम और रह्मत से उस अज़ाब की आवाज़ें हम लोगों से छुपा ली हैं, वर्ना अगर इस अज़ाब की आवाज़ें हम लोग सुनने लगें तो कोई इन्सान ज़िन्दा न रह सके, और ज़िन्दगी में कोई काम न कर सके, इसलिये यह उसकी रह्मत है कि उन्हों ने उसको छुपा लिया है, लेकिन अल्लाह तआ़ला कभी कभी अपने किसी बन्दे पर इसको ज़ाहिर भी फ़रमा देते हैं। बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ज़ाहिर हुआ कि उन दोनों पर अज़ाब हो रहा है? फिर फ़रमाया:

इनको ऐसी दो बातों की वजह से अज़ाब हो रहा है कि उन बातों से बचना उनके लिये कुछ मुश्किल नहीं था, अगर ये लोग चाहते तो आसानी से बच सकते थे, लेकिन ये बचे नहीं उसकी वजह से यह अज़ाब हो रहा है। एक यह कि इनमें से एक साहिब पेशाब की छींटों से नहीं बचते थे, एह्तियात नहीं करते थे। जैसे ऐसी जगह पेशाब कर दिया कि जिसकी वजह

से जिस्म पर छींटें आ गयीं। ख़ास तौर से उस ज़माने में ऊंट बकरियां चराने का बहुत रिवाज था। और हर वक़्त इन जानवरों के साथ रहना होता था। जिसकी वजह से अक्सर उनकी छींटें पड़ जाती थीं। उससे इहितयात न करने की वजह से अज़ाब हो रहा है। (मुस्नद अह्मद)

पेशाब की छींटों से बचिये

यह बड़ी फ़िक्र की बात है, अल्हम्दु लिल्लाह हमारे यहां इस्लाम में पाकी के आदाब तफ़्सील के साथ सिखाये हैं कि किस तरह पाकी करनी चाहिये, लेकिन आज मग़्रिबी तहज़ीब के ज़ेरे असर ज़ाहिरी सफ़ाई सुथराई का तो बड़ा एह्तिमाम है, लेकिन शरीअत की पाकी के अह्काम की तरफ़ ध्यान नहीं। लैट्रिन ऐसे तरीक़ों से बनायी जाती हैं कि उनमें छींटों से एह्तियात नहीं होती।

और एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"استنزهوا عن البول، فان عامة عذاب القبر فيه"

(سنن دارقطنی)

यानी पेशाब से बचो, इसलिये कि अक्सर क़ब्र का अज़ाब पेशाब की वजह से होता है, पेशाब की छींटों का जिस्म पर लग जाना, कपड़ों पर लग जाने की वजह से क़ब्र का अज़ाब होता है, इसलिये इसमें बड़ी एह्तियात की ज़रूरत होती है।

"चुग़ली" से बचिये

और दूसरे साहिब को इसलिये अज़ाब हो रहा है कि वह दूसरों की चुग़ली बहुत किया करते थे। इसकी वजह से क़ब्र में

अज़ाब हो रहा है। चूंकि इसमें हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुग़ली को क़ब्र के अज़ाब का सबब क़रार दिया इसलिये यह चुग़ली का अमल ग़ीबत से भी ज़्यादा सख़्त है। इसलिये कि इसमें बुरी नियत से दूसरों के सामने बुराई बयान करता है, ताकि दूसरा शख़्स उसको तक्लीफ़ पहुंचाये।

राज़ खोलना चुग़ली है

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि "अह्याउल उलूम" में फ़रमाते हैं कि दूसरों का कोई राज़ ज़ाहिर कर देना भी चुग़ली के अन्दर दाख़िल है। एक आदमी यह नहीं चाहता कि मेरी यह बात दूसरों पर ज़ारिह हो, वह बात अच्छी हो या बुरी हो, इससे बहस नहीं। जैसे एक मालदार आदमी है, और वह अपनी दौलत दूसरों से छुपाना चाहता है और वह यह नहीं चाहता कि दूसरों को यह मालूम हो कि मेरे पास इतनी दौलत है, अब आपने किसी तरह सुनगुन लगा कर पता लगा लिया कि उसके पास इतनी दौलत है। अब हर शख़्स से यह कहते फिर रहे हैं कि उसके पास इतनी दौलत है। यह जो उसका राज़ ज़ाहिर कर दिया, यह चुग़ली के अन्दर दाख़िल है और हराम है।

या जैसे एक शख़्स ने अपने घरेलू मामले के अन्दर कोई प्लान या मन्सूबा बना रखा है। आपने किसी तरह पता चला कर दूसरों के समाने बयान करना शुरू कर दिया, यह चुग़ली है। इसी तरह किसी क़िस्म का राज़ हो, उसकी इजाज़त के बग़ैर दूसरों पर ज़ाहिर करना चुग़ली के अन्दर दाख़िल है। एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"المجالس بالامانة" (ابوداؤد شریف)

मज्लिसों के अन्दर जो बात की जाती है वह भी अमानत है। जैसे किसी शख़्स ने आपको राज़दार समझ कर मज्लिस में आपसे एक बात कही अब वह बात जाकर आप दूसरों से नक़ल कर रहे हैं तो यह अमानत में ख़ियानत है। और यह भी चुग़ली के अन्दर दाख़िल है।

ज़बान के दो अहम गुनाह

बहर हाल ज़बान के गुनाहों में से आज दो अहम गुनाहों का बयान करना मक़्सूद था। ये दोनों गुनाह बड़े ज़बरदस्त और संगीन हैं। इनकी संगीनी आपने हदीसों के अन्दर सुनीं, लेकिन जितने ये संगीन हैं आज इनकी तरफ़ से उतनी ही बे परवाई और ग़फ़्लत है। मज्लिसें इनसे भरी हुयी हैं, घर इनसे भरे हुये हैं, ज़बान क़ैंची की तरह चल रही है, रुकने का नाम नहीं लेती। ख़ुदा के लिये इसको लगाम दो और इसको क़ाबू करो, और इसको अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ चलाने की फ़िक्र करो, वर्ना इसका अन्जाम यह है कि इसकी वजह से घर के घर तबाह हो रहे हैं। आपस में ना इत्तिफ़ाक़ियां हो रही हैं। फ़ितने हैं, दुश्मनियां हैं। ख़ुदा जाने कितने गुनाहों और फ़ितनों का ज़रिया है, और आख़िरत में तो इसकी वजह से जो अ़ज़ाब होने वाला है वह अपनी जगह है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल और रह्मत से इसकी बुराई और ख़राबी समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين